Research Review
The Refereed & Peer Review International Journal
www.researchreviewonline.com
ISSN : 2321- 4708
July 2019, Year - 6 (75)
Paper ID : RRJ000019

रामचरित मानसमें चरित्रण निरूपण

डॉ. अश्विन के. कुहादिया

कुछ विद्वानों की मान्यता है कि गोस्वामी तुलसीदास जी की चारित्रिक अवधा२णा प्रकृति की त्रिगुणात्मिक प्रवृत्ति को लेक२ चली हैं प्रभु सृष्टि में व्याप्त है औ२ सृष्टि प्रभु में समाई हुई हैं सृष्टि का उपादान का२ण प्रकृति हैं वह त्रिगुणमयी हैं सत् का २ंग श्वेत, रज का रंग लाल औ२ तम का रंग काला हैं मूल प्रकृति में इन तीनों गुणों की साम्यावस्था हैं विकृति में वैषम्य एवं वैशिष्ट्य हैं साम्यावस्थावाली मूलह्नप्रकृति को हृदयंगम क२ लेना कठिन हैं वह आलिंगन हैं प्रकृति की विकृतियाँ ही समझ में आ पाती हैं, जो लिंग मात्र से, विशेष तथा अतिशेय तीन भागों में विभक्त हैं लिंग मात्र पंचतन्मात्राएँ शब्द स्पर्श रस गंध हैं विशेष में अन्तःक२ण चतुष्य तथा बाह्य का२णोंह्नप कर्मेन्द्रियों की गणना हैं अविशेष में पृथ्वी आदि पांच भूत आते हैं समध का स्त्रोत प्रकृति का प्रथम विकास महत्व अथवा बृद्धि है मानस में इसे विष्णु के रूपह्नवर्णन द्वा२ा स्पष्ट किया गया हैं बाह्य रूप से आन्तरिक स्वरूप तक चलिए, तो बाह२ तमोगुण का आधा२ लिए विष्णु का श्यामल श२ी२ हैं, दृष्टि तरूण, अरूण, कमल के समान हैं औ२ क्षीरसागर में जो श्वेत सतोगुण का प्रतीक हैं, उनका निरन्तर निवास हैं तुलसीदास ने विष्णु के इस रूप में तीनों गुणों का सुन्द२ सामंजस्य कर दिया हैं मानस में जो विष्णु या राम का कार्य हैं, वही उनकी शक्ति सीता का कार्य हैं वह उद्भव स्थिति संहार कारिणी, क्लेश हारिणी तथा सर्वश्रेष्ठकारी हैं उद्भव में रज, स्थिति में सत्व, तथा संहार में तम की विशिष्टता हैं

शक्ति औं२ शक्तिमान एक ही हैं जल से लहर और वाणी से अर्थ जैसे पृथक नहीं वैसे ही शक्ति और शक्तिमान में अविनाभाव समबन्ध हैं दोनों एक ही हैं वे मूक को वाचाल, पंगु को गतिशील तथा अंधे को दृष्टि सम्पन्न कर देते हैं वे इन क्लेशों को ही दूर नहीं करते कल्याण भी प्रदान करते हैं ''

तुलसी के प्रत्येक मात्र के चरित्र का अलगह्नअलग चित्रण करें तो यह तथ्य समझने योग्य हैं प्रायः सभी पात्रों के स्वभाव चित्रण में उन्होंने प्रकृति के गुणों को समायोजित किया हैं और उनमें एक व्यापक सुधार करने का प्रयत्न किया हैं चरित्र कल्पना के क्षेत्र में उनकी कला का यथेष्ट परिचय प्राप्त करने में सहायता मिलेगी विश्लेषण करने पर हमें ज्ञात होता हैं कि आधा२ह्नग्रन्थों में कथा के पात्र जिस आवेश अविचार और अधीरता का परिचय देते हैं, उन्हें दूर करते में विचार धीरता औंर शीलता के द्वारा उनमें सुधार करता हैं वह उन्हें उनसे मुक्त क२के ही ग्रहण करता हैं

गोस्वामी तुलसीदास भारतीय आदर्श एवं चारित्रिक गरिमा के एक मात्र उद्घोषक हैं जो विश्व जनीत संस्कृति के समक्ष भारतीयता तथा चरित्र की उदात्त भावना रख सके उनके अकेले रामचरित महाकाव्य ने वह प्रभाव उत्पन्न किया जिसकी साहित्यिक चकाचौंध से विश्व स्तम्भित हैं, अन्यान्य भाषाओं के विद्वानों को विवशतः इस महाकाव्य की ओ२

ISSN : 2321- 4708
July 2019, Year - 6 (75)
Paper ID : RRJ000019

आकर्षिक होना पडा हैं भारतीय चरित्र की पावनता का जो स्वस्थ स्वरूप ''रामचरितमानस द्वारा प्रणीत हुआ वह इतना सहज तथा स्वाभाविक है कि उससे विश्व अनस्यूत हुए बिना न रह सका

तुलसी ने ''नामा पुराण निगमागम सम्मतंयद्''के अनुसार अपनी जो मौलिक उद्भावना की उसके आधार पर राम भारतीय जन मानस में आदर्श रूप में पूजित होकर भारतीय आत्मा का कण्ठाहा२ बन गये तुलसी ने राम के जीवन को इतना लोकव्यापी बना दिया कि राम के मंगलमय रूप के प्रति सभी के हृदय में आदर की भावना उत्पन्न हो उठी राम मर्यादा पुरूषोत्तम के रूप में हिन्दू परिवार के अंग होते हुए भी ब्राह्मणस्वरूप हैं वे दया, करूणा, कर्तव्य पालन और सत्य के आकार स्वरूप बन गये हैं वे साधारण जनमानस के लिए अनुकरणय और भक्तों के कण्ठाहार भी हैं राम ब्रह्म होकर भी भक्तों के दुःखो को दू२ क२ने के लिए अवता२ रूप में प्रगट होते हैं औ२ मानवीय आच२ण क२ते हुए दुष्टों का संहा२ क२ते हैं

सृष्टि के विविधता के बीच देव, मनुज औ२ असु२ ये तीनों द्विपद वर्ग का मिलते जुलते प्राणी हैं इनमें जो भेद औ२ अन्त२ हैं वह उनके गुण एवं कर्म यानी विचा२ औ२ आचा२ का हैं सामान्य लोक धा२ण के अनुसा२ असु२ के मनुज तथा मनुज से देव श्रेष्ठ माना जाता हैं प२ इस संदर्भ में २ामकथा का दृष्टिकोण कुछ औ२ ही हैं सिद्धांत रूप में देवत्व का वर्चस्व स्वीका२ क२ते हुए भी २ामकथा ने व्यवहा२ के क्षेत्र में मानवता को ही अधिक महत्व दिया हैं २ामकथा के अनुशीलन से यह बात स्पष्ट हो जाती हैं कि २ामकथा में मानवीय पक्ष को न केवल आसुरी पक्ष से, अपितु देवी पक्ष से भी अधिक उच्च स्थान दिया गया हैं उसमें यहाँ एक ओ२ देवी पक्ष को अति काल्पनिक, पा२लौकिक तथा लोकाचा२ के लिए अव्यावहा२िक समझक२ उसे लोकग्राह्य बनाने में निरूत्साह दिखाया गया हैं, वहीं दूस२ी ओ२ आसुरी पक्ष को कुत्सित, जनशोषक, पीडक तथा असामाजिक मानक२ उसका ह२ स्थिति में वि२ोध किया गया हैं इस बात को यदि आज की भाषा में वाणी दी जाय तो २ामकथा के दृष्टिकोण से देवी पक्ष च२म दक्षिण पंथी औ२ आसुरी पक्ष च२म वामपन्थी हैं इसीलिए मानवीय पक्ष ही २ामकथा को वांच्छनीय अतएव मान्य हैं इसीलिए समूची २ामकथा में मानवीय पक्ष का ही प्रतिपादन किया गया हैं औ२ इसी को विकसित एवं पल्लवित क२ने के सर्वत्र चेष्टा की गयी हैं

आसुरी शक्ति प२ मानवी शक्ति के विजय की कहानी तो २ामकथा का मुख्य प्रतिपाद्य विषय ही हैं प२ उसमें २ामकथा के समक्ष देवी शक्ति भी बौनी प्रदर्शित की गयी हैं २ामकथा के अनेक पात्रों ने देवासु२ संग्राम में देवों की सहायता की है औ२ उन्हें विजय दिलाई हैं कथा नायक श्री२ाम के सम्मुख तो देवशक्ति अपने प्राण के लिए ह२ समय गुहा२ लगाती २ही दश२थ ने भी आसुरों के मुकाबले देवों की सहायता की थी देवत्व प२ मानवत्व की श्रेष्ठता को प्रतिष्ठित क२ने वाले अनेक स्थल २ामकथा में देखे जा सकते हैं उँचे निवासु नीचि क२तूती देखि न सकहिं प२ाइ विभूती, अथवा कपट कुचाल सींव सु२ २ाजू प२ अकाज प्रिय आपन काजू, के रूप में उनकी समीक्षा क२ २ामकथा ने

ISSN : 2321- 4708
July 2019, Year - 6 (75)
Paper ID : RRJ000019

दैवी शक्ति ही सर्वश्रेष्ठता पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया हैं दूसरी ओर बडे भागु भानुष तन पावा सूरदुर्लभ सद्गन्थन गावा कहकर मानवत्व को श्रेष्ठता के धरातल पर बैठाने कार्य भी रामकथा ने किया राम कथा के मानवीय पक्ष का यह एक पहलू हैं

कवि तुलसी का उद्देश्य समाज यथातथ्य चित्र प्रस्तुत करना ही नहीं था, वे लोकमंगल की भावना से प्रेरित थे, अतः यथार्थ और आदर्श प्राप्त और प्राप्तव्य इन दोनों का समानान्तर चित्रण तुलसी काव्य में मिलता हैं, यदि कलियुग की कुमन्त्रणाएँ एवं विभीषिकाएँ चतुर्दिक सुरसा समान मुँह फैलाये गत्यावरोध कर रही हैं तो रामराज्य की साध्वी सीता भी हैं, जो गर्भकाल में भी लोकवृत्ति को संयमित एवं पति के राजमार्ग को प्रशस्त करने के लिए स्वच्छा से वनवास ग्रहण करती हैं जिस प्रकार कलयुग किसी उच्छृंखल चरित्र एवं दुर्घटना के छद्म में अपनम कुप्रभाव फैलाता हैं, उसी प्रकार रामराज्य रामराज्य भी कहीं गिरि कन्दाराओं में भी निषाद, जटायु एवं शबरी के माध्यम से सत् की रक्षा में तत्पर रहता हैं यही तुलसी के काव्य का सन्देश हैं।

रामचरितमानस में शबरी को दिया गया भगवान श्री राम का उपदेश 'नवधाभक्ति' के नाम से प्रसिद्ध हैं यह भक्ति प्रेम, श्रद्धा, विश्वास और कर्म पर आधारित हैं शबरी की भक्ति में इन चारों तत्वों का समावेश था फलतः भगवान के प्रति निश्चल प्रेम, अपार श्रद्धा और अचल विश्वास रखते हुए भव को भगवान मानकर मानव मात्र की निष्काम सेवा में संलग्न शबरी में भक्ति अपनी पूर्णता को प्राप्त हो चुकी थी अत एव प्रश्न उठता हैं कि भगवान ने नवधा भक्ति का उपदेश वस्तुतः किसे दिया ? अवश्य ही वह उपदेश शबरी के व्याज से उस मानव समाज को दिया गया हैं जिसमें देववृत्ति, मानववृत्ति, पशुवृत्ति और राक्षसवृत्ति वाले सभी मानव सम्मिलित हैं नारि पुरूष सचराचर कोई कह कर भगवान राम ने इसी ओर संकेत किया हैं अत एव रामचरितमानस में नवधा भक्ति के माध्यम से सार्वभौमिक मानवधर्म का ही वर्णन हुआ हैं

गाँधीजी ने 'रामचरित मानस' के विषय में कहा हैं, – ''तुलसीदास जी की श्रद्धा ने हिन्दु संसार को रामायण के समान ग्रन्थ भेंट किया हैं रामायण विद्वत्ता से पूर्ण ग्रन्न हैं किन्तु उसकी भक्ति के प्रभाव के मुकाबले उसकी विद्वता कोई महत्व नहीं रखती श्रद्धा और भक्ति का ग्रन्थ हैं, जिसमें अन्तः शुद्धि सम्यकवान्, सम्यकचरित्र और 'सम्यक्दर्शन' का मणिकाचन योग हैं जिसमें मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता हैं और इसका आध्यात्मिक तथा लौकिक महत्व भी स्पष्ट उभर कर सामने आता हैं तथा उसकी प्रासंगिकता की महिमा गरिमा उद्भाषित होती हैं, हमारे युग जीवन परिवेश से जुडे रहने, युगबोध का अभिज्ञान प्राप्त करने में 'मानस' सहायक हैं मानस का प्रतिपाद्य भक्ति भावना की शुभ्राभा का विकीर्ण करता हैं।